फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का अध्ययन

रामचन्द्र कृष्णमूर्ति

फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा अक्तूबर 2022 में जारी किया गया। यह और इसके साथ स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एनसीएफ़-एसई, अगस्त 2023) पाठ्यचर्या रूपरेखा के उन चार दस्तावेज़ों में से हैं जिन्हें भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को लागू करने के लिए विकसित किया गया है। एनसीएफ़-एफ़एस को शिक्षा के उस स्वप्न को वास्तविकता में बदलने के लिए विकसित किया गया था जिसकी कल्पना और चर्चा एनईपी 2020 में की गई है, जिसमें 3 से 8 साल की उम्र वाले शुरुआती बचपन के महत्त्वपूर्ण वर्षों पर ज़ोर दिया गया था।

यह लेख ड्राफ्ट समिति द्वारा अपनाए गए कुछ ख़ास पहलुओं और डिज़ाइन सिद्धान्तों को उजागर करते हुए एनसीएफ़-एफ़एस से पाठकों का परिचय कराता है। पाठ्यचर्या की इस रूपरेखा का एक महत्त्वपूर्ण योगदान है बाल विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सीखने के मानकों का स्पष्ट उल्लेख। यह लेख सीखने के मानकों की ज़रूरत और प्रासंगिकता की पड़ताल करता है और फिर इस आशा के साथ इस दस्तावेज़ का वर्णन करता है कि यह एनसीएफ़-एफ़एस के पाठकों के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करेगा।

एनसीएफ़-एफ़एस 2022 की ख़ास बातें

एनसीएफ़-एफ़एस 2022, 360 पेज का एक दस्तावेज़ है जो 3-8 साल की उम्र के बच्चों के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) के प्रति एक एकीकृत दृष्टिकोण की परिकल्पना करता है। इसकी समग्रात्मक पाठ्यचर्या विकास के सभी प्रासंगिक क्षेत्रों को समाहित किए हुए है, जैसे शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक, भाषा और भाषायी, संज्ञानात्मक, सौन्दर्यात्मक और सांस्कृतिक तथा इसमें सीखने की सकारात्मक आदतें भी शामिल हैं। विकास के इन क्षेत्रों की पहचान *पंचकोषों*[i] के प्राचीन भारतीय ज्ञान तथा बाल विकास की अपेक्षाकृत आधुनिक वैज्ञानिक समझ, दोनों के आधार पर की गई है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा सीखने के विशिष्ट मानकों को परिभाषित करती है, जिन्हें पाठ्यचर्या के लक्ष्य, क्षमताओं और सीखने के प्रतिफलों के रूप में व्यक्त किया गया है। इनके बारे में हम इस लेख में और विस्तार से बात करेंगे।

जहाँ सीखने के मानक इस बात को परिभाषित करते हैं कि वांछित शैक्षिक उपलब्धियाँ क्या हैं, वहीं यह दस्तावेज़ इस बारे में विशेष और विस्तृत दिशा-निर्देश देता है कि इन उपलब्धियों को कैसे हासिल करना है। यह विस्तार से शैक्षणिक विधियों, सीखने का वातावरण तैयार करने के तरीक़ों, विषयवस्तु के चुनाव के सिद्धान्तों और इस स्टेज के सीखे हुए का आकलन करने के उपयुक्त तरीक़ों का विस्तार से बयान करता है। आगे यह उदाहरणात्मक साप्ताहिक कार्यक्रमों और दैनिक समय-सारणियों के माध्यम से उन तरीक़ों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिनसे स्कूल के समय को व्यवस्थित किया जा सकता है।

एनसीएफ़-एफ़एस फ़ाउंडेशनल स्टेज में कम-से-कम दो भाषाओं में साक्षरता विकसित करने के तरीक़े स्पष्ट रूप से जाहिर करता है। यह सन्तुलित साक्षरता के ऐसे दृष्टिकोण की सिफ़ारिश करता है जिसमें शब्दों की पहचान करने और शब्द लिखने में शुद्धता (निम्न-क्रम के कौशल) तथा भाषा की समझ और अभिव्यक्ति (उच्च-क्रम के कौशल), दोनों पर बराबर ज़ोर दिया जाए। साक्षरता शिक्षण के लिए चार ब्लॉक पद्धति[ii], जो मौखिक भाषा विकास, शब्दों की पहचान, पठन और लेखन पर एक साथ ध्यान देती है, बुनियादी साक्षरता हासिल करने का माध्यम है।

साक्षरता के साथ बुनियादी संख्या ज्ञान, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) बनाता है और इस पर एनईपी 2020 में विशेष ज़ोर दिया गया है। संख्या ज्ञान को विकसित करने के लिए सुझाई गई शिक्षण पद्धति भी सन्तुलित है और अवधारणात्मक समझ व कौशल अभ्यास पर बराबर ज़ोर देती है। गणित शिक्षण के लिए चार ब्लॉक[iii] में मौखिक गणित बातचीत, कौशल शिक्षण, कौशल अभ्यास और गणित के खेल शामिल हैं ताकि बच्चे में समस्या-समाधान करने के कौशल को प्रोत्साहित किया जा सके।

एनसीएफ़-एफ़एस को तैयार करने में अपनाए गए डिज़ाइन के सिद्धान्त

एनसीएफ़-एफ़एस को तैयार करने वालों ने इसे लिखते वक़्त सोच-समझकर कुछ सिद्धान्तों को अपनाया है। इस दस्तावेज़ के पाठक को इन सिद्धान्तों और इसके लेखकों द्वारा अपनाए गए डिज़ाइन के विकल्पों के पीछे के तर्काधार को समझना ज़रूरी है।

प्रयोगकर्ताओं के लिए मार्गदर्शिका

एनसीएफ़-एफ़एस बिल्कुल स्पष्ट रूप से इसे उपयोग करने वालों, यानी कि स्कूली शिक्षकों को मद्देनज़र रखकर बनाया गया है। पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ सामान्यतः आदर्शवादी और गूढ़ शब्दों में लिखी जाती हैं जिसके कारण प्रयोगकर्ता इन्हें अपने रोज़मर्रा के काम से जोड़ नहीं पाते। इसलिए, एनसीएफ़-एफ़एस दस्तावेज़ में इस्तेमाल की गई भाषा को सोच-समझकर कम तकनीकी और कम अकादमिक रखा गया है।

यह दस्तावेज़ गूढ़ सिद्धान्तों और दृष्टिकोणों के स्तर तक सीमित नहीं रह जाता। इसमें वास्तविक कक्षाओं और शिक्षकों की आवाज़ों के विशिष्ट उदाहरण एवं शब्द चित्र दिए गए हैं ताकि ये सिद्धान्त ज़्यादा ठोस लग सकें। ऐसा इस आशा में किया गया है कि ये उदाहरण दिशा-निर्देशों और सुझावों को प्रयोगकर्ताओं के लिए ज़्यादा सहज और सुलभ बना दें। हालाँकि इससे यह दस्तावेज़ पढ़ने के लिहाज़ से काफ़ी बड़ा हो गया है लेकिन साथ ही ज़्यादा प्रासंगिक और प्रभावी भी।

विशिष्टता

प्रयोगकर्ताओं के लिए प्रासंगिक होने के लिए यह ज़रूरी है कि इस प्रकृति का दस्तावेज़ प्रासंगिक हो तथा वास्तविकता से न हटे। शैक्षिक गलियारों में, शैक्षिक विचार के सम्बन्ध में, अक्सर यह असमंजस रहता है कि क्या निदेशात्मक है और क्या विशिष्ट। एनसीएफ़-एफ़एस यह मानता है कि विशिष्ट होना शिक्षकों के लिए उपयोगी होता है और उन्हें उनके काम में मार्गदर्शन देने में मदद करता है, लेकिन ज़रूरी नहीं कि यह विशिष्ट प्रक्रियाओं को निर्धारित करे। शिक्षकों के पास हमेशा से यह स्वायत्तता रही है और हमेशा रहनी चाहिए कि वे प्रक्रियाओं को अपनी परिस्थितियों के अनुरूप ढाल सकें और अपना सकें।

व्यावहारिकता

किसी पाठ्यचर्या की रूपरेखा बनाना उम्मीद और आदर्शवादिता की प्रक्रिया होती है। इसका लक्ष्य होता है स्कूली शिक्षा में सुधार। लेकिन अगर इन लक्ष्यों को व्यवहार्य और सम्भव बनाना हो तो यह ज़रूरी है कि सुझाव व अनुशंसाएँ न सिर्फ़ विशिष्ट हों बल्कि वर्तमान वास्तविकताओं और व्यावहारिकताओं से उभरती हों। एक प्रकार से पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ स्कूली शिक्षा में बदलाव के माध्यम से सामाजिक बदलाव का लक्ष्य रखती हैं। पाठ्यचर्या रूपरेखाओं द्वारा सुझाए गए बदलावों को लागू करने योग्य होने के लिए बड़ी छलाँगों के बजाय छोटे-छोटे क़दमों के रूप में होना चाहिए।

विकास का क्षेत्र	भाषा और साक्षरता विकास				
पाठ्यचर्या के उद्देश्य	CG-10 : बच्चे भाषा-1 को पढ़ने और लिखने में धाराप्रवाहिता विकसित करते हैं				
दक्षताएँ	C-10.5 : छोटी कहानियाँ पढ़ते हैं और पात्रों, कथानक और लेखक क्या कहना चाहता है, इसकी पहचान करके, ख़ुद से ही उनके अर्थ समझते हैं				
सीखने के प्रतिफल	उम्र 3 से 8				
	चित्र पुस्तकें पढ़ते हैं और वस्तुओं तथा क्रियाओं की पहचान करते हैं।	चित्र पुस्तकें पढ़ते हैं, पात्रों और कथानक की पहचान करते हैं और कहानी को छोटे-छोटे क्रमों में बताते हैं।	छोटे सरल टेक्स्ट वाली पुस्तकों को बोलकर पढ़ते हैं, सटीक अनुक्रम और विस्तार के साथ कहानी का अनुमान लगाने और उसे फिर से कहने के लिए दृश्य संकेतों और टेक्स्ट का इस्तेमाल करते हैं।	कहानी की अपरिचित किताबें पढ़ना शुरू करते हैं और शिक्षक के मार्गदर्शन से उन्हें समझते हैं।	पात्रों, कथानकों, अनुक्रमों और लेखक के दृष्टिकोण को पढ़ते और पहचानते हैं।

चित्र-1 : *सीखने के मानकों का एक अधोप्रवाह।*

सीखने के मानकों की स्थापना

एनसीएफ़-एफ़एस की एक ख़ास विशेषता है इसमें की गई सीखने के मानकों की अभिव्यक्ति। सीधे-सीधे कहें तो सीखने के ये मानक विशेष रूप से इस सवाल का जवाब देते हैं कि *क्या पढ़ाना है*? उपयोगी और लागू करने योग्य होने के लिए सिर्फ़ स्कूली शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों और उद्देश्यों या हर स्कूली विषय के विशिष्ट लक्ष्यों का ज़िक्र करना काफ़ी नहीं है। व्यापक लक्ष्यों को और विशिष्ट लक्ष्यों व योग्यताओं तक लाया जाना चाहिए जो शैक्षिक उपलब्धियों की स्पष्ट अभिव्यक्तियाँ होती हैं। दस्तावेज़ में सीखने की अपेक्षित उपलब्धि का एक स्पष्ट अधोप्रवाह दिखाई देता है जहाँ हर सेट बारीक ब्यौरों में जाता है लेकिन उसका पिछले स्तर से स्पष्ट जुड़ाव होता है। (**चित्र-1**)

स्कूली शिक्षा के लक्ष्य

अपने मौलिक अर्थ में शिक्षा का अर्थ है उस ज्ञान व क्षमताओं को हासिल करना जिन्हें मूल्यवान समझा जाता है। इस तरह शिक्षा का उद्देश्य मानकीय होता है जो उन मानकों पर आधारित होता है जिनकी कल्पना समाज करता है। भारतीय सन्दर्भ में, यह मानकीय दिशा है हमारा संविधान। एनसीएफ़-एफ़एस के लिए, शिक्षा की यह दृष्टि उन बातों से उपजती है जिनका ज़िक्र एनईपी 2020 में किया गया है।

शिक्षा के लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल मिलकर सीखने के मानकों का निर्माण करते हैं। सीखने के मानक पाठ्यचर्या के तर्क का व्यापक लक्ष्यों से सीखने के विशिष्ट प्रतिफलों की ओर एक स्पष्ट और विशिष्ट अधोप्रवाह है। पूर्व में उल्लिखित सिद्धान्तों के आधार पर देखें तो सीखने के ये मानक एनसीएफ़-एफ़एस की रीढ़ हैं और सभी प्रयोगकर्ताओं को हमारे देश में स्कूली शिक्षा को सुधारने की स्पष्ट और सटीक दिशा दिखाते हैं। यह इस एनसीएफ़ का एक मौलिक योगदान है और यह पाठ्यचर्या की पिछली रूपरेखाओं की तुलना में एक स्पष्ट और बेहतर बदलाव है।

पाठ्यचर्या के उद्देश्य

एनसीएफ़-एफ़एस के पाठ्यचर्या के उद्देश्य एनईपी 2020 में परिकल्पित शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों, पंचकोषों में कल्पना किए गए विकास के क्षेत्रों के साथ-साथ बाल विकास के आधुनिक सिद्धान्तों से लिए गए हैं और ध्यान है बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) पर। एनसीएफ़-एफ़एस विकास के पाँचों क्षेत्रों में पाठ्यचर्या के 13 उद्देश्यों का सुझाव देता है, जिनमें सीखने की सकारात्मक आदतों के विकास का लक्ष्य शामिल है।

दक्षताएँ

पाठ्यचर्या के 13 उद्देश्यों में से प्रत्येक उद्देश्य के लिए 68 और विशिष्ट दक्षताओं की पहचान की गई है। ये दक्षताएँ शैक्षिक उपलब्धियों के देखे और आकलन किए जा सकने वाले वक्तव्य हैं। इन्हें एनसीएफ़-एफ़एस में परिभाषित किया गया है और ये दक्षताएँ शैक्षिक प्रगति की स्पष्ट निगरानी का मौक़ा देती हैं जो कि विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और व्यापक समाज सहित सभी हितधारकों को दिखाई देती हैं।

सीखने के प्रतिफल

सीखने के प्रतिफल दक्षताओं की प्राप्ति की तरफ़ जाने वाली शैक्षिक उपलब्धि के 'अन्तरिम चिह्न' होते हैं। सीखने के ये प्रतिफल फ़ाउंडेशनल स्टेज की समाप्ति पर किसी दक्षता विशेष को हासिल करने के लिए सीखने के पथ को भी दर्शाते हैं। विद्यार्थी फ़ाउंडेशनल स्टेज में स्कूली शिक्षा के पाँच साल बिताते हैं। हालाँकि दक्षताएँ इस बात को परिभाषित करती हैं कि हर स्टेज की समाप्ति पर क्या हासिल किया जाना है, पाठ्यपुस्तक तैयार करने वालों और शिक्षकों के इस बारे में स्पष्ट विचार होने चाहिए कि प्रति वर्ष सीखने की उपयुक्त उपलब्धियाँ क्या होंगी ताकि ये दक्षताएँ फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल कर ली जाएँ।

यह ध्यान देने वाली बात है कि जहाँ पाठ्यचर्या के उद्देश्य और क्षमताएँ काफ़ी हद तक सर्वव्यापी और स्थिर हैं, वहीं सीखने के प्रतिफल उस सन्दर्भ के लिए विशेष हो सकते हैं जिसमें कोई स्कूल काम करता है। इस तरह, एनसीएफ़-एफ़एस में परिभाषित सीखने के प्रतिफलों की प्रकृति उदाहरणात्मक ज़्यादा है और स्कूली तंत्र व स्कूल अपनी परिस्थिति के आधार पर दक्षताओं को हासिल करने हेतु अपने ख़ुद के सीखने के प्रतिफल तैयार कर सकते हैं।

इस दस्तावेज़ को पढ़ने के लिए मार्गदर्शन

फ़ाउंडेशनल स्टेज के शिक्षक के लिए, यह दस्तावेज़ न सिर्फ़ एक पाठ्यचर्या की रूपरेखा है बल्कि एक हैंडबुक के रूप में भी काम कर सकता है।

- सीखने के मानकों के विचार को समझना महत्त्वपूर्ण है। अध्याय-2 का सम्पूर्ण अध्ययन न सिर्फ़ इस बात को समझा पाएगा बल्कि शिक्षक को उन विशेष उद्देश्यों व क्षमताओं की जानकारी भी देगा जिनकी ओर उन्हें प्रयास करने चाहिए।
- अध्याय-4, 5 और 6 फ़ाउंडेशनल स्टेज के शिक्षकों के कार्य के लिए सीधे तौर पर प्रासंगिक हैं। शिक्षकों के लिए विस्तृत अनुलग्नकों को देखना मददगार होगा ताकि

उन्हें इन अध्यायों में रेखांकित सिद्धान्तों की ठोस समझ हासिल हो सके।

- विकासात्मक विलम्बों और अक्षमताओं वाले बच्चों की तरफ़ ध्यान देने के लिए अध्याय-8 बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- शैक्षणिक पदाधिकारियों और प्रशासकों के लिए अध्याय-1, 2 और 10 पढ़ना नियाहत ही ज़रूरी है।

एनसीएफ़-एफ़एस एक विस्तृत दस्तावेज़ है जो फ़ाउंडेशनल स्टेज में स्कूली शिक्षा के सभी पहलुओं के लिए स्पष्ट, विशिष्ट और व्यावहारिक दिशा-निर्देश प्रदान करता है। शिक्षकों व अन्य प्रयोगकर्ताओं को इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ने से बहुत लाभ होगा।

Endnotes

i The Upanishadic theory of the five sheaths of a human being.

ii National Curriculum Framework for Foundational Stage. 4.5.1.5 The Four-Block Approach for Literacy Instruction. p. 116

iii National Curriculum Framework for Foundational Stage. 4.5.2.3 Blocks of Teaching for Mathematics Instruction. p. 121

रामचन्द्र कृष्णमूर्ति अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बेंगलूरु के प्राचार्य हैं। इस भूमिका में आने से पहले वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में शिक्षक-प्रशिक्षक के बतौर काम कर रहे थे। उनकी रुचियों में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बच्चों के बीच बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) को बढ़ावा देना शामिल है। उनसे *ramchandar.k@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

एनसीएफ़-एफ़एस दस्तावेज़ का ढाँचा

एनसीएफ़-एफ़एस 360 पेज का दस्तावेज़ है और 10 अध्यायों व चार अनुलग्नकों में विभक्त है।
नोट : यहाँ उल्लेख की गई पेज संख्या अँग्रेज़ी दस्तावेज़ की है।

अध्याय

अध्याय-1 : प्रस्तावना और परिचय भारत में ईसीसीई के विकास, एनईपी 2020 की सोच, फ़ाउंडेशनल स्टेज में बच्चों के सीखने के बारे में वर्तमान समझ और भारत में फ़ाउंडेशनल स्टेज में स्कूली शिक्षा की परिस्थिति के बारे में एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। यह अध्याय इस पाठ्यचर्या की रूपरेखा के सन्दर्भ और सोच को स्थापित करता है। (पेज-13)

अध्याय-2 : लक्ष्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्य, दक्षताएँ और सीखने के प्रतिफल एनसीएफ़-एफ़एस का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है और यह फ़ाउंडेशनल स्टेज में विकास के सभी पाँच क्षेत्रों में सीखने के मानकों को स्थापित करता है। अध्याय में जहाँ पाठ्यचर्या के उद्देश्य और दक्षताएँ सम्पूर्ण रूप में दी गई हैं वहीं सीखने के प्रतिफलों के कुछ उदाहरणात्मक विवरण भी सामने रखे गए हैं। (पेज-49)

कक्षा-स्तर के सीखने के प्रतिफलों के पूर्ण समूह को अनुलग्नक-1 में व्यक्त किया गया है।

अध्याय-3 : भाषा शिक्षा और साक्षरता के प्रति दृष्टिकोण वह अध्याय है जिसमें भाषा शिक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण की रूपरेखा दी गई है। भारत में भाषायी विविधता की सम्पन्नता है और यह अध्याय इस ताक़त को स्वीकार करता है और इस बात का ख़ाका पेश करता है कि कब और किस तरह विभिन्न भाषाओं को स्कूल में शामिल किया जाना चाहिए। (पेज-71)

अध्याय-4 : शिक्षणशास्त्र में स्कूली शिक्षा के इस स्टेज के लिए उपयोगी विशिष्ट शैक्षणिक प्रक्रियाओं हेतु दिशा-निर्देश दिए गए हैं। इस अध्याय में छोटे बच्चों को संलग्न रखने के लिए खेल-आधारित तरीक़ों, साक्षरता और संख्या ज्ञान सिखाने की रणनीतियों, शिक्षकों व बच्चों के बीच सकारात्मक रिश्तों की भूमिका को विस्तार से समझाया गया है। (पेज-81)

अध्याय-5 : शिक्षण के लिए विषयवस्तु का चयन, संगठन और सन्दर्भीकरण सीखने के मानकों को हासिल करने के लिए उचित विषयवस्तु चुनने और उपयोग करने के मुद्दे के बारे में बात करता है। जहाँ पूर्व-प्राथमिक कक्षाएँ (3-5 साल की उम्र) मुख्यतः ठोस वस्तुओं और आनन्ददायक अनुभवों पर आधारित होती हैं, वहीं कक्षा-1 और 2 (6-8 साल की उम्र) में पाठ्यपुस्तकें भी एक भूमिका निभाना शुरू कर सकती हैं। सीखने के भौतिक परिवेश यानी कक्षा की व्यवस्था इस स्टेज में बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है और यह दस्तावेज़ कक्षा को व्यवस्थित करने के बारे में ख़ास सुझाव देता है। (पेज-135)

अध्याय-6 : सीखना आगे बढ़ाने के लिए आकलन फ़ाउंडेशनल स्टेज में आकलन के तरीक़ों के बारे में विस्तार से बात करता है। शुरुआती वर्षों में आकलन ज़्यादातर बच्चे के गुणात्मक अवलोकनों पर आधारित होना चाहिए। आकलन कई तरह के रूप ले सकते हैं जैसे पोर्टफ़ोलियो और वर्कशीट। इस अध्याय में विकास के सभी क्षेत्रों को समाहित करने वाले एक समग्र प्रोग्रेस कार्ड की ज़रूरत पर ज़ोर दिया गया है। (पेज-169)

अध्याय-7 : समय का नियोजन वार्षिक, साप्ताहिक और दैनिक रूप से समय को नियोजित करने के दिशा-निर्देश प्रदान करता है। सन्दर्भ के लिए उदाहरणात्मक समय-सारणियाँ भी दी गई हैं। (पेज-185)

अध्याय-8 : अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण क्षेत्र इस स्टेज के लिए प्रासंगिक दो बुनियादी सरोकारों की ओर ध्यान दिलाता है। विकासात्मक विलम्बों और अक्षमताओं (जिनमें सीखने की अक्षमताएँ शामिल हैं) की जल्दी पहचान करते हुए उनके समाधान के लिए काम करना सभी को समावेशी शिक्षा देने के लिए ज़रूरी है। बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। इस अध्याय में इन सब मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। (पेज-191)

अध्याय-9 : प्रारम्भिक स्टेज तक की कड़ियाँ फ़ाउंडेशनल स्टेज से प्रारम्भिक स्टेज तक की प्रगति की रूपरेखा देता है। प्रारम्भिक स्टेज में स्कूली विषय पाठ्यचर्या के क्षेत्रों के रूप में उभरते हैं और यह दस्तावेज़ विकासात्मक क्षेत्रों से इन स्कूली विषयों तक पहुँचने के तरीक़े को लेकर सुझाव देता है। विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र और आकलन के तरीक़ों में निरन्तरता और बदलाव, दोनों ही होंगे और इनके बारे में विस्तार से बात की गई है। (पेज-203)

अध्याय-10 : एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण स्कूली शिक्षा के समग्र पारिस्थितिकी तंत्र में ज़रूरी परिस्थितियों पर रोशनी डालता है और शिक्षकों की तैयारी, स्कूल के माहौल, अकादमिक पदाधिकारियों व अभिभावकों की भूमिका के बारे में बात करता है। तकनीकी पर आधारित एक खण्ड सूचना और संचार तकनीकों की भूमिका के बारे में बात करता है और इसके उपयोग के लाभों और सावधानियों, दोनों पर विचार करता है। (पेज-207)

अनुलग्नक (Annexure)

अनुलग्नक-1 सभी क्षमताओं के लिए सीखने के प्रतिफलों के उदाहरणात्मक विवरण देता है। (पेज-225)

अनुलग्नक-2 में शिक्षण, विषयवस्तु के चुनाव, आकलन और कक्षा व्यवस्थाओं जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं के उदाहरण शामिल हैं। (पेज-275)

अनुलग्नक-3 बच्चों की क्षमताओं की निपुण भारत की क्षमताओं के साथ मैपिंग करता है। (पेज-325)

अनुलग्नक-4 में भारत और दुनियाभर में ईसीसीई पर हुए शोध के सन्दर्भ शामिल हैं। (पेज-335)

रामचन्द्र कृष्णमूर्ति द्वारा प्रस्तुत

अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़। फोटो सौजन्य : बनिश्री महापात्रा

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय